सम्पादक की कलम से

यदि कोई 26/11 को भुला दे तो उसे संवेदनशील भारतीय से कुछ कम ही माना जाएगा। दस पाकिस्तानी समुद्री मार्ग से मुंबई आए- 28 घंटे तक कोहराम-रक्तरंजित तबाही मचाए रखी- 168 से अधिक लोग मारे गए- 600 घायल हुए फिर भी हमने क्या सबक सीखा ? जब-जब कोई भारतीय आतंकवाद का शिकार होता है तब-तब 26/11 जिन्दा हो उठता है। कसाब अकेला नहीं था- वे दस लोग थे। हवा से नहीं आए थे- उनके मुंबई में ठिकाने और मददगार थे। पूरा अमला- हाफिज सईद से लेकर डेविड हैडली तक के जिहादी जिस युद्ध को अंजाम देने के लिए दिन-रात एक किए हुए थे- वह जब हुआ तो वे अपने ही कुछ भारतीय थे जिन्होंने कहा कि यह हमने अमेरिकी एजेंसी की मिलीभगत से यहूदी संगठनों और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने करवाया है। हमसे बढ़कर भारत पर युद्ध थोपने वालों की सुरक्षा ढाल और क्या हो सकती थी?

जिस हमले में दस देशों के 28 नागरिक मारे गए, जिन्हें दुनिया के व्यापार, मीडिया, सुरक्षा क्षेत्र के सितारे माना जाता था। जिस हमले ने भारत की सुरक्षा प्रतिरोधात्मक तैयारियों की धज्जियां उड़ा दीं तो यह भी बताया कि देशभक्ति की पराकाष्ठा स्पर्श करने वाले सहायक पुलिस सब इंस्पेक्टर तुकाराम ओम्बले, एनएसजी कमांडो मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, हवलदार गजेंद्र सिंह जैसे जांबाज भी थे, जिन्होंने नेताओं और मीडिया की निर्लज्ज संवेदनशीलता की परवाह न करते हुए आतंकवादी को जिंदा पकड़ा और बाकी को मौत की नींद सुलाया। यह भी उस घटना ने बताया कि रंगे हाथ पकड़े गए कसाब को सजा देने में देश की अदालतों को थका देने वाले चार साल लगे। जो अदालत काले धन के खिलाफ जंग में जुटे लोगों की पंक्तियों में दंगे भड़कने का डर देखती है, उसे देश पर हमला करने वालों को सजा देने में लगे विलम्ब में कोई गलत बात नहीं दिखती।

26/11 इस बात का भी प्रमाण है कि यह देश अपने समाज को रक्तरंजित करने वालों के प्रति बेपरवाह ही रहता है। हमले में पुलिस की नाकामयाबी, गुप्तचर एजेंसियों की विफलता, मीडिया के शोर मचाने वाले पत्रकारों की मूर्खता से कराची में बैठे 'हैण्डलरों' को मनचाही सूचना का लाभ, सीसीटीवी का शहरों में लगाने में ही तीन साल लग जाना और देश पर आक्रमण करने वालों के प्रति राजनीतिक एकजुटता का नितांत अभाव- इन सब का आज तक कोई उत्तर नहीं दे पाया। बल्कि पाकिस्तान को यदि सबक सिखाने का प्रयास होता है तो उसका ही मजाक उड़ाने लग जाते हैं- वे जिन्हें संभवत: अपना राजनीतिक लाभालाभ अधिक महत्वपूर्ण लगता है।

26/11 इस बात का भी साक्षी है कि जो देश अपने वीरों का स्मरण नहीं करता, अपने सैन्य बलों का सम्मान और सुविधाएं नहीं देता, उसका कोई भविष्य नहीं होता। माना कि देश की जनता को पानी, सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य चाहिए, पर उससे भी बड़ी एक बात होती है और वह है देश की आत्मा। जैसे मनुष्य का मन होता है वैसे ही राष्ट्र का भी मन होता है। वह जीवित और मजबूत होता है तो बाकी सब संभव हो जाता है। यदि देश का मन बुझ जाए तो सब विकास और सुविधाओं के होते हुए भी देश सुरक्षित नहीं रह सकता।

ऐसे कितने विद्यालय या विश्वविद्यालय होंगे जिनमें देश की रक्षा के लिए प्राण देने वाले परमवीर चक्र विजेताओं के चित्र शान के साथ लगे हों। इनमें क्रिकेटरों के पॉट्रिट जरूर मिल सकते हैं, उनके नाम पर सड़कें और संस्थान मिल सकते हैं, लेकिन महाराष्ट्र या आंध्र या किसी भी अन्य प्रांत में क्या किसी पाठ्यपुस्तक में किसी परमवीर चक्र विजेता, 26/11 के किसी शहीद की जीवनी पढ़ायी जाती होगी ? क्या मुंबई के किसी मार्ग पर किसी किनारे पर 26/11 के नायकों की मूर्ति, चित्र या नाम खुदा होगा ? क्या मुंबई के ताज के पास, अंग्रेजी की सल्तनत और गुलामी के प्रतीक गेट वे ऑफ इंडिया के सामने 26/11 के शहीदों का पत्थर होगा, जहां हम फूल चढ़ा सकें ?

वे लोग जो वाघा सीमा पर मोमबत्तियां जलाते हैं या देश की फौज पर शाब्दिक हमले करने में शर्म नहीं करते, क्या कभी देश पर जान कुर्बान करने वालों के घर उनका हाल पूछने जाते हैं ? देशभक्ति के नारे और गीत तब तक खोखले रहेंगे जब तक हम सैन्य बलों का सम्मान एक सामान्य सामाजिक शिष्टाचार में शामिल नहीं करते। हमारे सामने रेल के डिब्बे में अनारक्षित टिकट लिए सैनिक खड़े-खड़े सफर करता है- हम सिकुड़कर उसे बैठने के लिए भी नहीं कहते। आज तक पूरे देश में शहीद सैनिक के परिवार को दी जाने वाली राशि पर एक नीति नहीं बनी। अलग-अलग प्रांतों में वहां के शासक अपने-अपने हिसाब से अलग-अलग राशियां और प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ देते हैं। किसी राज्य शासन ने यह आदेश जारी नहीं किया है कि भले ही सांसद, विधायक को जनपद के प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा दिए जाने वाले प्रोटोकॉल में कमी आ जाए, लेकिन सुरक्षा बलों के सैनिक यदि किसी कार्यवश उनके पास जाएं तो उसे प्राथमिकता दी जाए। अमेरिका हो या चीन, वहां का सामान्य जन अपने देश की सुरक्षा और सुरक्षा सैनिकों के प्रति सम्मान में सर्वोच्च भावना दर्शाता है। यह भाव भारत में भी जगे तो 26/11 को असली जवाब दे दिया समझा जाएगा। हमारी राजनीतिक अभिलाषाएं, हमारी चुनावी जीत-हार, बड़े पदों की होड़- सब कुछ सुरक्षा के आगे छोटी होनी चाहिए। देश की सुरक्षा के लिए राजनीतिक एकता ही 26/11 के दिन की मांग है। यह संभव कर दिखाना ही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शहरों का नाम बदलने का खेलः आस्था कम सियासत ज्यादा

भारत के शहरों का पुनर्नामकरण वर्ष 1947 में, अंग्रेजों के भारत छोड़ कर जाने के बाद आरंभ हुआ था, जो आज तक जारी है। कई पुनर्नामकरणों में राजनैतिक विवाद भी हुए हैं। सभी प्रस्ताव लागू भी नहीं हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पुनर्नामांकित हुए, मुख्य शहरों में हैं- तिरुवनंतपुरम (पूर्व त्रिवेंद्रम), मुंबई (पूर्व बंबई, या बॉम्बे), चेन्नई (पूर्व मद्रास), कोलकाता (पूर्व कलकत्ता), पुणे (पूर्व पूना) एवं बेंगलुरु (पूर्व बंगलौर)। आजकल उत्तर प्रदेश में शहरों का नाम बदले जाने का मामला सुर्खिया बटोर रहा है। विपक्ष आरोप लगा रहा है कि शहरों का नाम बदलकर योगी सरकार हिन्दुओं के वोट हासिल करना चाहती है जबकि बीजेपी वालों को लगता है कि नाम बदल कर सिर्फ शहरों को उनकी पुरानी पहचान दिलाई जा रही है।

उत्तर प्रदेश के मुगलसराय स्टेशन का नाम बदल कर पंडित दीन दयाल उपाध्याय स्टेशन किए जाने के बाद हाल ही में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इलाहाबाद और फैजाबाद जिलों का नाम क्या बदलकर क्रमशः प्रयागराज और अयोध्या क्या किया तो प्रदेश में जिलों के नाम बदले जाने की ही सियासत गरमा गई है। प्रदेश के कोने-कोने से कई जिलों के नाम बदलने की मांग उठने लगी है तो दूसरी तरफ शहरों का नाम बदले जाने का विरोध करने वाले भी मोर्चा संभाले हुए हैं। कोई आगरा का नामकरण अग्रवाल नगर या अग्रसेन के नाम पर करना चाहता है तो कोई मुजफ्फरनगर को लक्ष्मी नगर के रूप में नई पहचान देना चाहता है।

गौरतलब हो उत्तर प्रदेश में डेढ़ दर्जन से अधिक ऐसे जिले हैं जिनके नाम हमेशा विवाद का कारण बने रहते हैं। यह वह जिले हैं या तो जिनका नाम मुगल शासनकाल में बदला गया था अथवा मुगलकाल में यह जिले विकसित हुए थे। आगरा, अलीगढ़, इलाहाबाद, लखनऊ, आजमगढ़, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, फतेहपुर, फिरोजाबाद, बुलंदशहर, गाजियाबाद, गाजीपुर, मेरठ, मिर्जापुर, मुरादाबाद, मुगलसराय, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, शाहजहाँपुर, सुल्तानपुर जैसे जिले इसी श्रेणी में आते हैं। उक्त के अलावा कुछ जिलों के नाम अपभंश के चलते भी बदल गये हैं।

जिन जिलों के नामों को लेकर विवाद छिड़ा हुआ है उसमें आगरा प्रमुख जिला है। आगरा की आगरा एक ऐतिहासिक नगर है, जिसके प्रमाण यह अपने चारों ओर समेटे हुए है। वैसे तो आगरा का इतिहास मुख्य रूप से मुगल काल से जाना जाता है लेकिन इसका सम्बन्ध महर्षि अत्रिगरा से है जो 1000 वर्ष ईसा पूर्व हुए थे। इतिहास में पहला जिक्र आगरा का महाभारत के समय से माना जाता है, जब इसे अग्रबाण या अग्रवन के नाम से संबोधित किया जाता था। कहते हैं कि पहले यह नगर आयॅग्रह के नाम से भी जाना जाता था। तौलमी पहला ज्ञात व्यक्ति था जिसने इसे आगरा नाम से संबोधित किया।

मुजफ्फरनगर का नाम बदलने की सुगबुगाहट है। ये मांग भारतीय जनता पार्टी के मेरठ की सरधना सीट से विधायक संगीत सोम ने उठाई है। उन्होंने इलाहाबाद और फैजाबाद जिलों का नाम बदले जाने पर ट्वीट करते हुए कहा कि अभी तो बहुत से शहरों के नाम बदले जाने हैं। मुजफ्फरनगर का नाम बदला जाना है, मुजफ्फरनगर का नाम लक्ष्मीनगर रखने की लोगों की पहले से ही मांग है।

संगीत सोम ने यहीं नहीं रूके उन्हें एक और ट्वीट में कहा- मुगलों ने यहां की संस्कृति को मिटाने का काम किया है। खासतौर पर हिंदुत्व को मिटाने का काम किया है, हम लोग उसी संस्कृति को बचाने का काम कर रहे हैं। बीजेपी उससे आगे बढ़ेगी।

लखनऊ का नाम बदले जाने की भी चर्चा कम नहीं है। अतीत में लखनऊ प्राचीन कोसल राज्य का हिस्सा हुआ करता था। यह भगवान राम की विरासत थी जिसे उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण को समर्पित कर दिया था। अतरू इसे लक्ष्मणावती, लक्ष्मणपुर या लखनपुर के नाम से जाना गया, जो बाद में बदल कर लखनऊ हो गया।

इलाहाबाद जिसका हाल में नाम बदल कर प्रयाग किया गया है अतीत में प्रयाग के नाम से जाना जाता था। प्राचीन काल में शहर को प्रयाग (बहु-यज्ञ स्थल) के नाम से जाना जाता था। ऐसा इसलिये क्योंकि सृष्टि कार्य पूर्ण होने पर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ यहीं किया था, व उसके बाद यहां अनगिनत यज्ञ हुए।

प्रयागराज शहर का इलाहाबाद नाम अकबर द्वारा 1583 में रखा गया था। हिन्दी नाम इलाहाबाद का अर्थ अरबी शब्द इलाह (अकबर द्वारा चलाये गए नये धर्म दीन-ए-इलाही के सन्दर्भ से, अल्लाह के लिये) एवं फारसी से आबाद (अर्थात बसाया हुआ) यानि ईश्वर द्वारा बसाया गया, या ईश्वर का शहर। बीते माह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसका नाम इलाहाबाद से बदल कर प्रयागराज कर दिया था।

अयोध्या भारतवर्ष के उत्तरी राज्य उत्तर प्रदेश का एक नगर है। करोड़ो हिन्दुओं की आस्था के प्रतीक भगवान राम का यही जन्म हुआ था। पहले इसे साकेत नगर के नाम से जाना जाता था। प्रभु राम के अलावा समाजवादी चिंतक और नेता राममनोहर लोहिया, कुंवर नारायण, राम प्रकाश द्विवेदी आदि की यह जन्मभूमि रहा है,लेकिन मुगलकाल में इसका भी नाम फैजाबाद कर दिया गया था।

भगवान कृष्ण की नगरी मथुरा मधुदानव द्वारा बसाई गयी थी और उसी के नाम पर इसका नाम मधुपुरी पड़ा। इसको मधुनगरी और मधुरा भी बोला जाता था। शत्रुघ्न ने जब राक्षस का वध कर दिया, यह क्षेत्र धीरे-धीरे मथुरा बन गया। विष्णु पुराण में %मथुरा% का उल्लेख है, जिससे पता चलता है कि तब तक शहर का नाम बदल चुका था। शूरसेन के शासनकाल में इसको शूरसेन नगरी कहा जाता था।

भगवान् विश्वनाथ की नगरी का नाम 1956 से पहले बनारस था, लेकिन बाद में उसका नाम बदल कर वाराणसी रखा गया। वाराणसी दो नदियों के नाम से जुड़ कर बना हुआ है-वरुण और असी। बनारस इन्हीं नदियों के मुहाने पर बसा हुआ है। ऋग्वेद में इस शहर का नाम काशी भी लिखा गया है। वजह जो भी हो, पर लोगों को यह नया नाम अपनाने में काफी समय लग गया। पचास से अधिक वर्ष हो जाने पर भी आपको %बनारस% या %काशी% सुनने को मिल जाए, तो चौंकिएगा नहीं। मुगलसराय स्टेशन का नाम बदले जाने के बाद मुगलसराय जिले का भी नाम दीनदयालनगर किए जाने की चर्चा तेज है।

सहारनपुर के देवबंद का नाम बदलने की मांग कई बार हो चुकी है। देवबंद के बीजेपी विधायक ने तो बाकायदा यूपी सरकार से नाम बदलने के सिफारिश भी की है और कुछ दिन पहले कई जगह नाम बदलने के बैनर तक टंगवा दिए थे।

इसी प्रकार अन्य जिलों के नाम से छेड़छाड़ की बात कि जाये तो इस लिस्ट में कानपुर सहित कई जिले शामिल हैं। कानपुर का असली नाम कान्हापुर और कॉनपोर तो शामली का असली नाम श्यामली और आजमगढ का असली नाम आर्य गढ़ एवं बागपत का असली नाम बाग प्रस्थ तथा देवरिया का असली नाम देवपुरी वहीं अलीगढ़ असली नाम हरीगढ़ हुआ करता था।